city भास्कर
JAIPUR THURSDAY, 21/09/2017

कलम संवाद सीरीज के 25वें एपिसोड का हिस्सा बने ऑथर अश्विन सांघी। उन्होंने कहा, ऑथर कहानी सुनाने पर ध्यान दें बजाय सेंटेंस लिखने के। वे दैनिक भास्कर की न्यूज़ एडिटर प्रेरणा साहनी से चर्चा कर रहे थे। प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से आयोजित कलम दैनिक भास्कर संवाद के प्रस्तुतकर्ता श्री सीमेंट थे। वी केयर व होटल मैरियट सहभागी थे।

# कहानी का पहला पैराग्राफ़ पॉटहोल जैसा हो जिससे रीडर बाहर ना आ सके

अश्विन सांघी | जयपुर

नई और रोचक किताबें पढ़ने का शौक मुझे विरासत में मेरे नाना से मिला। कानपुर के घर में उनके पास किताबों की लाइब्रेरी थी। जिसमें लगभग 10 हजार किताबों का कलेक्शन था। वे हर हफ्ते मुझे एक नई किताब भेजते थे। इस तरह उन्होंने मुझे 412 किताबें गिफ्ट कीं। सच कहूं तो पढ़ाई का बीज नाना मेरे अंदर बचपन में रोप चुके थे। चूंकि मैं जोधपुर के मारवाड़ी परिवार से हूं। ऐसे में पिता की ख्वाहिश रही कि मैं पारिवारिक बिजनेस ही संभालूं। मगर शुरू से ही मेरी दिलचस्पी लेखन में रही। जब कभी मैं उनके साथ दफ्तर जाता, मुनीम जी कहते थे कि बुक रीडिंग नहीं बुक कीपिंग काम आएगी डेबिट और क्रेडिट सीख लोगे तो पूरी ट्रेनिंग यहीं हो जाएगी। यह कहना था ऑथर अश्विन सांघी का, जो बुधवार को दैनिक भास्कर कलम सीरीज के 25वें एपिसोड में बोल रहे थे।

## जहां सरस्वती वहीं लक्ष्मी

चूंकि पिताजी शुरू से अपने बिजनेस को लेकर गंभीर रहे। वे हमेशा मुझे बिजनेस सीखने का दबाव बनाते। ऐसे में नाना कहते बेटा लक्ष्मी और सरस्वती दोनों ही जरूरी हैं। मगर जहां लक्ष्मी होगी जरूरी नहीं कि वहां सरस्वती का निवास हो। पर जहां सरस्वती होगी वहां लक्ष्मी हमेशा रहेगी क्योंकि लक्ष्मी ईर्ष्यालु स्वभाव की हैं। इसी तरह बढ़ती उम्र के साथ पढ़ने का शौक भी मेरे अंदर पनपने लगा था। जब 2007 में पहली किताब रोजाबल लाइन आई तो घर में किसी को पता नहीं चला।इस सेल्फ पब्लिश बुक को शौन हैगिंस के नाम से लिखा जो बहुत हिट हुई।



## वाइफ ने कहा, थीसिस नींद की बीमारी ठीक कर सकती है

2002 में श्रीनगर जाना हुआ। वहां कनियर डिस्ट्रिक्ट में 124 ए.डी. के दौर का मकबरा देखा। स्थानीय लोगों ने उस मकबरे को लेकर अलग-अलग और रोचक कहानियां सुनाई। मैंने वहीं सोच लिया था कि इस विषय पर किताब लिखूंगा। रिसर्च वर्क के दौरान पता लगा कि मकबरे में दो शव दफनाए गए हैं। पहले आदमी का सिर मक्का की ओर था जिसका नाम नसीरुद्दीन था। दूसरे शख्स का सिर ईस्ट वेस्ट की ओर था। स्थानीय लोगों का मानना था कि ये ईसा मसीह हैं। वहां से घर लौटने के बाद एक दिन वाइफ ने कहा, तुमसे बात करना मुश्किल हो गया है। हर वक्त मकबरे की बातें करते हो। इस तरह वाइफ ने थीसिस लिखने की सलाह दी और कहा तुम्हारी थीसिस नींद की बीमारी ठीक कर सकती है। उन्होंने उसे कहानी का रूप देने की बात कही। इस तरह मैं फिक्शन बेस्ड कहानियां लिखने लगा।

## किताब के पहले पैराग्राफ में पॉट होल सी गहराई हो

मेरा मानना है कि किसी भी किताब का पहला पैराग्राफ पॉट होल जैसा गहरा हो ताकि रीडर उसमें उतरने बाद बाहर नहीं निकल सके। उस पैराग्राफ से निकलते-निकलते वह अपने आप दूसरे, तीसरे और फिर अगले पन्ने पर कब पहुंच जाए उसे खुद पता ना लगे। ऐसी गहराई किताब में हो। वहीं कहानी का अंत ऐसा हो कि रीडर अगली किताब पढ़ने को बेताब रहे। अक्सर राइटर्स सोचते हैं कि सेंटेंस अच्छा है लेकिन मेरा मानना है कि कहानी का नरेशन और रिसर्च इतनी दमदार हो कि रीडर्स उसमें खुद को पूरी तरह जोड़ लें। मैं सब्जेक्ट दिल से चुनता हूं लेकिन उनकी प्लानिंग दिमाग से करता हूं और किरदारों व प्लोट को एक्सेल शीट पर उतारता हूं।

## रिजेक्शन का वर्ल्ड रिकॉर्ड

47 पब्लिशर ने रेजेक्ट कर दिया था जो जे के रोलिंग के रेजेक्शन से ज्यादा था यानी मैंने रिजेक्शन का वर्ल्ड रिकॉर्ड बना लिया था ।पापा के एक दोस्त अक्सर घर आया करते थे। मुझे निराश देख पास बुलाकर कहा गुमसुम लग रहे हो। तब उन्होंने समझाया लाइफ में 99 पर्सेंट गुड लक काम करता है। 1 पर्सेंट ब्लडी गुड लक सबकी लाइफ में आता है। ऐसे निराश होने की जरूरत नहीं। बस मैंने भी अच्छे मौके और किस्मत का इंतजार किया। मेरा मानना है कि राइटर्स की चमड़ी मोटी होनी चाहिए। मेरी पहली आलोचक ने कहा था कि अश्विन को ये किताब 10 पेज बाद ख़त्म कर देनी चाहिए थी।

## लेखन में विषयों के प्रति सम्मान

वर्तमान दौर ऐसा है जहां चाणक्य या अशोक के लिए लेखन में डिसरिस्पेक्ट के खिलाफ कोई नहीं बोलेगा। किसी व्यक्ति विशेष या धर्म के खिलाफ गलत लिखने पर आक्रोश का सामना करना पड़ सकता है।